प्रातः सभा 2-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः रूहानी बच्चों प्रति वा ब्राहमणों प्रति। क्योंकि ब्राहमण ही बच्चे बनते हैं। तो ब्राहमण कहें वा बच्चे कहें बात एक ही है। अभी यह इस पुरुषोत्तम संगम युग पुण्यात्मा बन रहे हैं। यह है ब्राहमण कुल। पुण्यात्मा बनने वाले ब्राहमण। बाप है भी बगरी निवाज। गरीब ही आकर बाप से वरसा लेते हैं। गरीबों की सम्भाल की जाती है। हमजिन्स है। गरीबों को हमेशा साहुकारलोग दान भीकरते हैं। अपने जो ब्राहमण हैं आते हैं मालूम पड़ता है यह बहुत ही गरीब है। दुःखी है परन्तु सर्विस एबुल है तो उनकीभी सम्भाल करनी पड़ती है। वह फिर सेन्टर कीब्राहमण को जांच रखनी है। हमारे ब्राहमण कुलके अच्छे सर्विसएबुल बच्चे हैं, कोई उपद्रवमचाने वाला नहीं है, सर्विस में मददगार है, गरीब है तो उनकी सम्भाल करनी है। ब्राहमणी का काम है समाचार लिखना। ऐसी फलाना आता है। क्योंकि किसका पति मर जाता है वा पति का साथ नहीं रहता है, कोई झगड़ा आदि है यह ब्राहमण होकर कोई साहुकार से भीख मांगे शोभेंगे नहीं। हरेक अपने2 न्यात के लिए मदद करते हैं ना। गुजराती होंगी तो गुजरातियों को मदद करेंगी। तुम ब्राहमणों की भी न्यात (ब्रादरी) हुई। बच्चे गरीब हैं, पति कमा नहीं सकता बुधि अच्छी न है, ज्ञान में अच्छी सर्विस करते हैं औरों को भी सेवा करते हैं तो मदद करनी चाहिए। लिखना चाहिए ऐसे2 आते हैं उनकी सम्भाल करते हैं। पुरुषार्थ तो सभी करते हैं ना। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। संगम पर ही गरीबों पर तरस पड़ता है। हेड ब्राहमण को पूरी जांच करसमाचार देना चाहिए। सम्भाल करनी चाहिए। ज्ञान और योग की पढ़ाई तो चलनी ही है। जब तक तुम ब्राहमणों की सेना बुधि को पाये। बुधि को पाना ही है। इसमें विघ्न भी अनेक प्रकार के बहुत पड़ते हैं। लोक-लाज कुल मर्यादा को भीतोड़ना होता है। यह है वेहद की बात। तुमको बहुत कहते हैं पवित्र रहेंगे तो फिर सन्तान कैसे होगा। उनको यह पता ही नहीं है सतयुग में रावण होता ही नहीं। विकार का नाम ही नहीं होता। अभी तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो हमको पुरुषार्थ करना है और कराना है। औरों की सर्विस करना यह भी हर एक के तकदीर के ऊपर है। कर्मणा सर्विसकी भी मार्कसतो मिलती है ना। कोई कारपेन्टर की सर्विस करते हैं, ज्ञान तो लेते हैं ना। अपना कल्याण अच्छी रीत करते रहते हैं। परवरिश तो जो यहां होती है घर में भीइतनी नहीं हो सकती। सम्भाल तो करनी ही है। शरीर तन्दुरुस्त होगा तोसर्विस भी कर सकेंगे। सर्विसएबुल बच्चों पर प्यार भी रहता है। घोड़ाबहुत अच्छा होता है तो मालिक खुद प्यार से उनको खिलाते हैं, मालिश आदि करते हैं। बाबा अनुभवी तो है ना। सभीतो एक समान नहीं होते। सभी की अपनी2 चाल होती है। कोई2 को जनावरों पर बहुत प्यार रहता है। यहां तुमको अपने ब्राहमण कुल पर बहुत प्यार करना है, दैवी राजधानी में चलने वाले हैं। फिर उसमें अपना पुरुषार्थ अनुसार पद पाने हैं। खुद भी समझ सकते हैं हम जितना2 याद की यात्रा में रहेंगे उतना अपना ही कल्याण होता रहेगा। याद की यात्रा है ही मुख्य। स्टुडन्ट टीचर से पढ़ते हैं तो टीचर से योग लगाते हैं ना। फलाना टीचर हमको पढ़ाते हैं। यह याद रहेगी ना। परन्तु वह है अल्प काल के लिए याद। और अल्प काल का वरसा। यह तो अन्त तक बाप को याद करते रहना है। यह है वेहद कीयाद। वेहद का वरसा। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। मुख्य बात है यह। जिसमें ही बच्चे कमजोर रहते हैं। ऊंची चढ़ाई है ना। कोई2 सबजेक्ट डिफीकल्ट भी होतीहै। कई बच्चे थोड़ी मार्कस लेकर नापास हो जाते हैं। यह पढ़ाई है बहुत सहज। यह भी बता देते हैं माया का मुकाबला इसमें ही होना है। माया भी पहलवान से पहलवान ही लड़ती है। ऐसे नहीं मैं तो बहुतों को समझाता हूं। सर्विस करता हूं। परन्तु अपनारजीस्टर भी देखनाहै। ऊंच पद मिलनाहै याद की यात्रा से। ऐसेतो समझाने में बहुत ही बीचयां तीखी हैं। परन्तु मुख्य सबजेक्ट हैयाद की यात्रा। इसमें ही बहुत मेहनत है। जितना रुस्तम बनेंगे उतना ही जोर से माया वार करेगी। स्वप्न में भी तंग करेगी। संकल्प विकल्प आवेंगे। बाकीसंग में भी फर्स्ट ग्रेड सेकण्ड ग्रेड थर्ड ग्रेड होते हैं ना। सभी बात में ऐसी ग्रेड्स होते हैं। सतो रजो तमो। लड़ाई में भी ग्रेड्स होते हैं। रथ रहती है बड़े2 कमान्डर आदि

को पकड़ें। तो बाप सभी बच्चों को समझाते हैं। ऐसे नहीं हम तो सिखलाते हैं। म्युजियम मिला है सर्विस करते हैं। परन्तु योग का कुछ ख्याल ही नहीं रहता। योग में ही माया अच्छी रीत पछाड़ती है। घड़ी2 याद भूला देती है। पुरुषार्थ करते2 ही कर्मातीत अवस्था को पाना है। यह बातें वहां होंगी नहीं। क्योंकि वहां तो रावण राज्य ही नहीं। यहां तो माया का पाम्प है। यह कोई ईश्वर का पाम्प नहीं। तुम्हारा ईश्वरीय पाम्प तो सतयुग में होगा। हीरे जवाहरों के महल आद होंगे। यहां यह माया का पाम्प है। इसलिए मनुष्य कहते हैं स्वर्ग तो यहां ही है। बिचारों को कुछ भी पता नहीं है। स्वर्ग कहा जाता है नई दुनिया को। इनको नई दुनिया थोड़े ही कहेंगे। नई दुनिया में तो थोड़े देवतायें ही होते हैं। एक ही डिटी धर्म था। यहां तो माया का पाम्प कितना है। 100मार के मकान आद बनाते रहते हैं। स्वर्ग में भी इतने मार(मंजिल)के मकान नहीं बनते। यहां तो बड़े2 महल एरोपलेन, बिजलियां आद देख समझते हैं स्वर्ग तो यहां ही है। दिन प्रति दिन माया का पाम्प बढ़ता जाता है। जबतक विनाश शुरु इसको कहा जाता है पिछाड़ी। माया जाने वाली है तो पिछाड़ी में अपना शो करती है। वह लोग तो समझते हैं गांधी स्वर्ग स्थापन कर के गया। और स्वर्ग में तो सिर्फ भारत ही होते हैं। अभी तो कलियुग है। अनेक धर्म है। यह भीकिसकी बुधि में नहीं बैठता। बाबा से बम्बई में बड़े2 करोड़पति आकर मिलते थे, समझते तो है ना यह तो सिंध का दादा है। उनकेइतनेसेन्टर्स हो गये हैदादा से मिलें तो सही। तो कहते थे हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। लाख डेढ की मोटरें हैं। बड़े2 बिलडींगस हैं। एरोपलेन में आते-जाते हैं। कोई तकलीफ नहीं हैं। यही स्वर्ग के सुख हैं। बड़े2 पर भी मातायें आती हैं। परन्तु उन्हों को भी रोकते हैं। क्योंकि पवित्रता की बात है। यह भी नहीं समझते हो स्वर्ग में तो प्युरिटी पास प्रापर्टी रहती है। यहां तो कितने झगड़े आद लगे पड़े हैं। कोई2 मनुष्य तो फिर कह देते हैं भावी। कुछ भी हो जाता है कहेंगे ईश्वर की भावी बनी हुई है। इसमें विचार क्या करनाहै। ऐसे कह अपन को सन्तुष्ट कर देते हैं। ईश्वर ने दिया, फिर ले लिया। खलास। फिक्र हम क्यों करें। ईश्वर की भावी कह देते हैं। अपन को थमाने लिए गुरु गुसाई भी कहेंगेईश्वर की भावी परराज़ी रहना चाहिए। उन बिचारों को तो यह पता ही नहीं है। स्वर्ग क्या है नर्क क्या है समझते हैं कलियुग में तो अजन 40 हजार बर्ष पड़े हैं। घोर अंधियारे में हैं ना। बाप कहते हैं उन्हों के साथ कितनी मेहनत करनी पड़ती है। साहुकार इतना उठाये न सकेंगे। उन्हों को अपना सुख धन दौलतें काबहुत है। गन्द में एकदम लिपटे हुये हैं। अभी वह किचरा बाप ही निकालते हैं। यह जैसे कोई को कटर से निकालशुद्ध किया जाता है। तुम शुध हो रहे हो ड्रामा अनुसार। बाप ने समझाया है रावण राज्य में 5तत्व भी तमोप्रधान हैं। सतयुग में तत्व भी सतोप्रधान होते हैं। जिससे शरीरभी शुध पुष्प समान बनता है। अभी तुमको पुरुषार्थ करा रहे हैं। माया के विघ्न तो आवेंगे। कोशिश कर बाप को याद करना है। हम बाबा केबच्चे हैं बाबाहमको पढ़ा रहे हैं। ऐसी पढ़ाई छोड़ेंगे कैसे। कोई2 को माया देह अभिमान में ला देती है। फिर विघ्न भी डालते हैं। समझाया जाता है आपस में खिट2 मत करो। ब्राहमणीके लिए कुछ उल्टा सुल्टा बोलो। तुम्हारा काम है बाप को याद करना। ब्राहमणी हो वा न हो तुम अपना पुरुषार्थ करते रहो। यहां रहने वालों से भी गृहस्थ व्यवहार में रहने वाली ऊंच पद पा सकती है। उन्हों को तो ड्रामा अनुसार चिट्ठी में पड़ना ही था पकने के लिए। उसमें भी कितने विघ्न पड़े। सारी विलायत तक आवाज़ चला गया। ब्रहमाकुमारियों का नामसुनकर डरते हैं। यह जादू सिखावेंगी। जादू भी है, सेकण्ड में मनुष्य को देवता बनाना जादू है ना। अभी तक वह आवाज़ चला आता है। अखबारों में तो बहुत महिमा भी लिखते हैं। फिर ने कोई ने दो पैया दिया तो वह उल्टा बकवाद करने लग पड़ते हैं। खास यह सन्यासी शंकराचार्य आद तो तुम्हारे दुश्मन हैक्योंकि उन्हों के पास तुम्हारी चिट्ठी गई हुई है। वह तो अपन को बहुत ही ऊंच समझते हैं। तो वह भी तुम्हारे दुश्मन हैं। समझते हैं यह तो शास्त्र आद कुछ पढ़ी नहीं है। तो दूसरा फिर है आर्यसमाजी दुश्मन। वह देवताओं आद को मानती नहीं। उनमें भी एक समान के नहीं होते हैं। कुछ विघ्न भी डालते हैं। सिंध में भीउन्हों का हुआ। समझाया जाता

था तुम औरों के बीच में क्यों पड़ते हो। तुम्हारा धर्म अपना हमारा धर्म अपना। शुरू से लेकर आर्यसमाजियों और संन्यासियों को चला आता है। अभी तुम समझते हो माया के बहुत पास हैं। मायावी मनुष्य तुम्हारा आपोजीशन करते हैं। तुम और सभी को घूमे मिलाकर अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। वह भी गुप्त। यह है गुप्त सेना। अननोन वट वेरी वेल नोन। बन्देमात्रम का अर्थ तो समझते ही नहीं। देवियों की पूजा भी होती हैं। परन्तु समझ कर नहीं करते हैं। इन देवियों ने ही भारत को स्वर्ग बनाया है। वह कहते हैं स्त्री नर्क का द्वार तो वह हो गये आसुरी मत परमाया मत परकहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। तुम बच्चे इन सभी बातों को तो जानते हो। कल्प2 यह होता है। नई बात नहीं। कितने बिघ्न आद पड़ते हैं। अखबरों द्वारा भी हंगामा कितना होता है। सिन्धी अखबर ने भी क्या2 डालते थे। अभी तुम प्रदर्शनी आद करते हो। समझते हो पुराना वायुमंडल ठीक होता है। यह भी नई बात नहीं। स्थापना में तो टाईम लगता है। आधा कल्प का सिर पर बोझा है। वह विकर्म विनाश के लिए भी मेहनतचाहिए। विकार में गिरा तो की कमाई चट हो जाती है। और ही बिघ्न रूप बन पड़ते हैं। यह भी अनादी ड्रामा है। इतने अनेक धर्म हैं जो फिर न होंगे। इन सभी का विनाश का भी प्रबन्ध किया हुआ है कल्प पहले मिसल। बच्चियां भी कहती हैं बाबा हम आप से कल्प पहले भी मिली थी। बेहद का वरसा लेने लिए। स्वर्ग का वरसा तो सभी को मिलता ही है। पुरुषार्थ भी करते रहते है नम्बरवार पुरु0 अनुसार। बाप भी कहते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सर्विस करते रहते हैं। माया बिघ्न भी डालती है। देहअभिमान में आने से फिर सभी माया फंसा देते हैं। इसलिए बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी धर्म को भूल जानाहै। मायाबिघ्न भी डालती है। जीते जी मरना है। श्रीमत पर बाप के साथ घर जाना है। राजधानी तो स्थापन होनी ही है। यह भी तुम बच्चे समझते हो। कोई2 पुराने अपने धर्म में भी पक्के रहते हैं। फिर मुंझते हैं हम क्या करें। ज्ञान को तो समझा परन्तु और तो कोई मानते ही नहीं। बाबाकहते हैं अगर तुम शादी आद न करावेंगे तो तुम्हारे सभी दुश्मन बन पड़ेंगे। इसलिए भल पार्ट बजाओ। किसको खुश आद करने लिए पूजा आद भी भल करो। अन्दर में ज्ञान तो है। शिव बाबा को याद करते रहो। बुधि योग लग जाना चाहिए शिव बाबा से। बाकी रखा करने लिए चलाते रहो। याद से ही आत्मा को पावन बनाना है। बाकी बाबा की कोई मना नहीं है। बाप को याद करना है। वही मालिक है। बाप ही मालिक होते हैं ना। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। क्रिश्चन लोग भी कहते हैं 3000बर्ष पहलेपैराडाईज था। अभी तुम समझते हो तो कहते होबात तो बरोबर ठीक है। स्वर्ग को लाखों बर्ष तो हुये नहीं। नहीं तो क्यों कहते स्वर्गवासी हुआ। वैकुण्ठ गया। स्वर्गवासी हुआ तो तुम जरूर नर्क में हो ना। स्वर्ग में ले जाने वाला तो बाप चाहिए। यहां स्वर्ग कहां से आया। नर्क और स्वर्ग दोनो इकट्ठा थोड़े ही हो सकता है। कितने मुर्ख बुधि है। नर्क में रहने वाले जरूर नर्क में ही पुनर्जन्म लेंगे ना। कितनीमेहनत लगती है समझाने में। बाप के पास बच्चे आते हैं बाप को कितने प्रिय लगते हैं। लौकिक तो जैसे याद भी नहीं। क्योंकि वह तो हो गये शुद्र कुल के। खुद भी जानते हैं हम ब्राहमण कुल के नहीं हैं। बाप भी कहते हैं हमारे परिवार के नहीं। फिर भी कुछ न कुछ यज्ञ की सेवा करते हैं। थोड़ा भी सुनते तो हैं ना। स्वर्ग में तो आवेंगे जरूर। फिर आकर पाई पैसे की प्रजा बनेंगे। कहते हैं यह भी अच्छा। कच्चे2 बच्चों को तो माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। फिर कह देते ड्रामा की भावी। काला मुंह कर दिया। खुद भी कहते हैं। बाबा भी लिखते हैयह क्या बाप आया है गोरा बनाने तुमफिर काला मुंह कर दिया। एकदम निर्लज्ज बन जाते हैं। माया ऐसा पकड़ लेती है। क्रिमनल आई को सिविल आई बनाना है। इसलिए कहा जाता है अपने को आत्मा समझो। देह के अभिमान में मत जाओ। कितने मेहनत कराते हैं। फिर भी फेल हो जाते हैं। देह अभिमान में आ जाते हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं ना। ध्यान में भी आलमाईटी बाबाबता देते हैं तुम्हारे पास यह जोड़ा ठीक नहीं आता है। इनकी दृष्टि अच्छी नहीं है। इनको आने न दो। तो वह जरूर खबरदार हो जाते हैं। ध्यान में फायदा भी है तो कहां फिर माया बहुत धोखा भी दे देती है। ध्यान कोई बड़ी बात नहीं है।——

बाबा ममा खुद हीं जाते। यह भी ड्रामा में नूंध है। जो कुछ होता है, कल्प पहले भी हुआ था भावी। कोई नुकसान होता है। माया के ख्याल में फंस जाते हैं। कल्प पहले भी ऐसा हुआ था। सो अभी भी होता है। बाप हमेशा ड्रामा पर थमाते रहते हैं। समझानी तो बच्चों को बहुत ही मिलती है। याद की यात्रा से ही माया पर विजय पानी है। फिर भी यहां आये भी फिर चले गये। अभी तक भी हिलते रहते हैं। माया खाजाती है। गायन है ना गज को ग्राह ने खाया। कल की बात है। लाखों बर्ष की बात गाई थोड़े ही जाती है। बाप तो समझाते हैं अच्छी रीत अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। तूफान माया के बहुत ही जोर से आवेंगे। माया भी देखती कहां तक यह मजबुत हैं। महावीर तो महावीर हो रहेंगे ना। आदी देव को महावीर कहते हैं ना। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार। रोज2 समझाते रहते हैं जब तक अपना राजस्थापन न हुआ है। वह है हद का राजस्थान। यहां तो बेहद की बात है। भारत सारा दैवी राजस्थान था। अभी राजस्थान थोड़े ही है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर, पंचायती राज्य है। पाण्डवराज्य कौरव राज्य का अर्थ क्या है वह भी समझाना पड़ता है। शास्त्रों में तो गंदी2 बातें लिख दी है। द्रौपदी को दाव में रखा। उनको 5 पति थे ... यह सारी कचड़ा इन शास्त्रों से ही निकला है। यहां भी बहुत हैं चक्राता तरफ जो 5 पति रखते हैं। उनकी निशानी भी दिखाते हैं। कितनी नानसेन्स बातें बातें हैं। सुनने वाले तो बड़े ही खुश होते हैं ताली बजाते हैं। तुम तो समझते हो यह सभी हैं भक्ति मार्ग के गपोड़े। शास्त्र आद पढ़ना यह दुर्गति का रास्ता है। बाप आकर के सभी की सदगति करते हैं। बाप जो सिखलाते हैं बिल्कुल एक्युरेट।

तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों आत्मा को आत्मा समझो। मैं पतित पावन हूं। मुझे तुमने बुलाया है तो मैं आया हूं पावन बनाने। पावनदुनिया सतयुग को ही कहा जाता है। भक्ति और ज्ञान का तुमको नालेज है। और कोई को भी पता नहीं है। पवित्रता के कारण विघ्न भी कितने पड़ते हैं। नाम ही पड़ जाता है बांधेली गोपीकारें। और सतसंगों में तो ऐसी होती है नहीं। गुरु लोग भी आजकल बहुत ही गंदे निकल पड़े हैं। यह थोड़े ही जानते है सद्गुरु एक ही बाप है। कितना रात-दिन का फर्क है। वह कहते हैं कलियुग की आयु इतने लाख बर्ष हैं। और बाप कहते हैं कल्प की आयु 5000 बर्ष है। कितना फर्क है। माईयों को भी शास्त्र पढ़ाये, संस्कृत और रिधी-सिधी आद सिखलाते हैं। फिर कितना मान हो जाता है। अभी जानते हो इस पूरानी दुनिया का तो विनाश सामने खड़ा है। विनाश की भी रिहलसल होती रहेंगी। आगे चल तुम देखेंगे क्या होता है। यह जन्म तुम्हारा सब से अच्छा है। सर्विस भी करनी है। स्थापना तो अजन पुरी हुई नहीं है। अभी तो झाड़ बहुत ही छोटा है। बहुत सर्विसएबुल हो तो बहुतों को आप समान बनावेंगे। बहुत म्युजियम खुलेगा। बिहंग मार्ग की सर्विस के लिए ही म्युजियम आद खुली खोलते हैं। बाहर में लिख दो। बेहद के बाप से विश्व की बादशाही मिलती है आकर समझो। कितने ढेर मनुष्य हैं। सभी को बाप का मैसेन्ज देना है। घर2 में देना है। तुम्हारा शास्त्रों में भी है एक ने डोरापादिया हमको तो मालूम नहीं पड़ा। बाप तो हर तरह से समझाते हैं। कोई2 नये भी अच्छा पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं। स्थापना तो होनी ही है। इसमें संशय बुधिकब नहीं बनना चाहिए। सतगुरु अकाल है। सर्व की सदगति दाता है। वाह सतगुरु तो यही है। ऊंच ते ऊंच भगवान। वह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। रास्ता भी सभी धर्म वालों के लिए एक ही है। सभी के लिए बाप कहते हैं मामेकं याद करो। अच्छा बच्चों को गुड मार्निंग और नमस्ते।